350TH MARTYRDOM DAY OF SRI GURU TEGH BAHADUR JI

Sri Guru Tegh Bahadur Ji was born on April 1, 1621, in Amritsar, the son of Sri Guru Hargobind Sahib ji and Mata Nanaki, and was named Tyag Mal at birth. He later became the ninth Guru of the Sikhs and was known as Sri Guru Tegh Bahadur Ji. From childhood, Sri Guru Tegh Bahadur Ji was trained in martial arts, swordsmanship, and horsemanship. In the Battle of Kartarpur (1635), fought between the Sikhs and the Mughals, Guru Sahib displayed exceptional bravery and remarkable swordsmanship. Pleased with his bravery, his father, Sri Guru Hargobind ji, bestowed upon him the title of "Tegh Bahadur."

On November 24, 1675, Sri Guru Tegh Bahadur ji was publicly executed in Delhi on the orders of Mughal Emperor Aurangzeb for opposing forced conversions and defending religious freedom. Gurdwara Sisganj Sahib in Chandni Chowk, Delhi, is the site of Sri Guru Tegh Bahadur Ji's supreme martyrdom. This year marks the 350th anniversary of that supreme martyrdom. On this occasion, it is time to reaffirm the values that empower interfaith dialogue, civic consciousness, and our shared cultural unity. In this sense, Sri Guru Tegh Bahadur Ji is an eternal source of inspiration for India's cultural soul.

Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp on 350th Martyrdom Day of Sri Guru Tegh Bahadur Ji.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet: : Ms. Nenu Gupta

Text : Based on the content provided by Ministry of Culture

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



श्री गुरु तेग बहादर जी का 350वां शहीदी दिवस

350TH MARTYRDOM DAY OF SRI GURU TEGH BAHADUR JI

विवरणिका BROCHURE

श्री गुरु तेग बहादर जी का 350वां शहीदी दिवस

श्री गुरु तेग बहादर जी का जन्म 1 अप्रैल 1621 को अमृतसर में श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी और माता नानकी के पुत्र के रूप में हुआ था और जन्म के समय उनका नाम त्याग मल रखा गया था। वे बाद में सिखों के नौवें गुरु बने और श्री गुरु तेग बहादर जी के नाम से जाने गए। बचपन से ही श्री गुरु तेग बहादर जी को मार्शल आर्ट, तलवारबाजी और घुड़सवारी में प्रशिक्षित किया गया था। करतारपुर की लड़ाई (1635) में, जो सिखों और मुगलों के बीच लड़ी गई थी, उसमें उन्होंने असाधारण वीरता और तलवारबाजी का अद्भुत कौशल दिखाया था। उनकी इस बहादुरी से प्रसन्न होकर उनके पिता श्री गुरु हरगोबिंद जी ने उन्हें 'तेग बहादर' की उपाधि प्रदान की थी।

24 नवंबर 1675 को दिल्ली में मुगल बादशाह औरंगजेब के आदेश पर श्री गुरु तेग बहादर जी का सार्वजनिक रूप से सिर कलम कर दिया गया था, क्योंकि उन्होंने जबरन धर्मांतरण का विरोध किया था और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा की थी। दिल्ली के चांदनी चौक स्थिति गुरुद्वारा सीसगंज साहिब वह स्थान है जहाँ श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत हुई थी। इस वर्ष उस सर्वोच्च बलिदान को 350 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर, यह समय उन मूल्यों को दोहराने का है जो अंतरधार्मिक संवाद, नागरिक चेतना और हमारी साझा सांस्कृतिक एकता को सशक्त बनाते हैं। इस अर्थ में श्री गुरु तेग बहादर जी भारत की सांस्कृतिक आत्मा के शाश्वत प्रेरणा स्रोत हैं।

डाक विभाग गुरु तेग बहादर जी के 350वें शहीदी दिवस पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है ।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/: सुश्री नीनू गुप्ता
विवरणिका/विरूपण कैशे

पाठ : संस्कृति मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	303300
Stamps Printed	:	303300
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00